ब्यावर शहर के 175वें स्थापना दिवस के

शताब्दी हीरक जयंती पर्व पर

मंगल फोटो स्टूडियो व गीता कोचिंग सेन्टर

की ओर से ब्यावर-मेरवाड़ा निवासियों को

हार्दिक शुभकामनाएं

'बादशाह' वासुदेव मंगल

इतिहासकार, स्वतंत्र लेखक एवं मुक्त वक्ता व कैरियर काउन्सलर

भगत चौराहा, ब्यावर। फोन : 250502 (दु.), 254135 (फैक्स), 252597 (नि.)

Website: www.beawarhistory.com, www.geetavision.com

निरन्तर

सोमवार, 1 फरवरी 2010

राजस्थान पत्रिका

अजमेर, सोमवार 1 फरवरी, 2010

पोस्टल रजि. नं. आरजे/एजे/26/2005

175 का हुआ अपना शहर

j रिपोर्टर

ब्यावर। एकबारगी शायद आपको यकीन न हो लेकिन ब्यावर शहर की स्थापना के 174 साल पूरे हो गए हैं। शहर एक फरवरी को एक बार फिर अपना स्थापना दिवस मनाने जा रहा है। इन पौने दो सौ सालों में शहर में ढेरों बदलाव आए हैं। कर्नल डिक्सन की ओर से जंगल में बसाए गए ब्यावर शहर ने स्थापना से लेकर अब तक आर्थिक दृष्टि से कई चोले बदले हैं। आबादी के लिहाज से ब्यावर से कई छोटे शहर जिला बन चुके हैं लेकिन ब्यावर अभी तक इससे महरूम है। एक फरवरी को शहर का 175वां स्थापना दिवस है। स्कोटिस कर्नल डिक्सन ने एक फरवरी 1836 को शहर को क्रॉस की आकृति में बसाने की नींव अजमेरी गेट पर रखी थी।

ऐसे बदला स्वरूप

इतिहासकार वासुदेव मंगल बताते हैं कि वर्ष 1984 से लेकर 1960 तक कपड़ा उद्योग ही ब्यावर की आर्थिक धुरी था। 1970 के दशक के आते-आते कपड़ा उद्योग ने दम तोड़ दिया। इसके बाद सीमेंट उद्योग एस्बेस्टॉज पाइप के रूप में नया उद्योग सामने आया। 1995 के बाद शहर में ग्राइडिंग उद्योग उभरा और खनिज केंद्र के रूप में ब्यावर का नाम अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर लिया जाने लगा। नब्बे के दशक में श्री सीमेंट तथा बाद में अम्बुजा सीमेंट की स्थापना से ब्यावर की पहचान सीमेंट नगरी के रूप में भी होने लगी। तिलपट्टी के कुटीर उद्योग के कारण भी ब्यावर पहचाना जाता है।

ऐसे हुआ विघटन

30 मई 2002 में एकीकृत ब्यावर उपखण्ड का भी विघटन करते हुए इसके 360 राजस्व गांवों में से 144 राजस्व गांवों को अलग कर मसूदा उपखण्ड बना दिया गया। 1956 से ब्यावर में स्थापित मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के कार्यालय को वर्ष 2005-06 में हटाकर अजमेर स्थानान्तरित कर दिया गया। साठ के दशक में ब्यावर से नगर सुधार न्यास को भंग कर दिया गया और शहर की कमान नगर परिषद को सौंप दी गई।

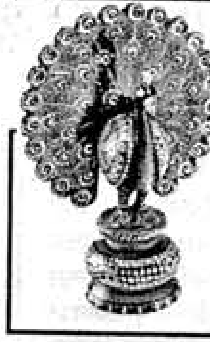

1 सोमवार फरवरी 2010

आर.एन.आई. नं. 48885/91

आदत पुण्यों को भी पाप में बदल देती है।

✍ स्वामी विवेकानन्द

समय का सजग प्रहरी

निरन्तर

ब्यावर से प्रकाशित दैनिक

वासुदेव मंगल
Career Counsellor
गीता कोचिंग सेन्टर
www.geetavision.com
www.beawarhistory.com

डाक पंजीयन ...1/08-10
वर्ष : 19 कुल पृष्ठ : 4
मूल्य : 2.00 रु. अंक : 250
फोन : 226456, 2?3550
मो. : 94140-10110, 10177

ब्यावर के विकास हेतु इसे मेरवाड़ा राज्य घोषित करना आवश्यक

आज ब्यावर का 175 वां स्थापना दिवस

ब्यावर (वासुदेव मंगल)। स्वाधीनता संग्राम में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले ब्यावर शहर का नाम राजनीति के धुरंधरों की जुबान पर हमेशा छाया रहा। यहां आजादी के दीवानों ने बरसों अज्ञातवास बिताने के साथ ही क्रांतिकारी योजनाओं को जन्म दिया, गुप्त ठिकानों पर बैठकें की, हथियार बनाकर क्रांतिकारियों तक पहुंचाने के साथ ही भामाशाहों से मदद लेकर आजादी की आग को जलाये रखा। ब्यावर की अपनी भौगोलिक व प्राकृतिक विशेषताओं के साथ ही यहां की मिट्टी में शामिल श्रम-वीरों के पसीने की गंध और वीर-प्रसूता भूमि के जांबाजों की गौरवगाथाओं के किस्से इसकी ऐतिहासिक महत्ता को और भी बढ़ा देते हैं। आज ब्यावर की स्थापना के 174वर्ष पूरे होकर यह अपनी शताब्दी हीरक स्थापना वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस अवसर पर सभी नगर वासियों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

ब्यावर, अजमेर-मेरवाड़ा स्टेट का मुख्यालय रहा और इसकी स्थापना हेतु 1 फरवरी 1836 के दिन अजमेरी गेट के पास नींव का पत्थर रख इसका भूमिपूजन किया गया। ब्यावर के संस्थापक तत्कालीन ब्रिटिश प्रशासक कर्नल चार्ल्स डिक्सन थे जिन्होंने विधिवत पंडितों के मंत्रोच्चारण के बीच कुंकुम-चावल-मोली के साथ पूजा की।

तब राजपूताना में 18 देशी रियासतों के साथ दो अंग्रेजी राज्य थे। एक अजमेर, दूसरा मेरवाड़ा। इस क्षेत्र में मेर जन-जाति के लोग भारी तादाद में निवास करते थे इसलिए इस क्षेत्र को मेरवाड़ा नाम दिया गया। रावत और मेहरात भी इसी मेरवाड़ा के मुख्य अंग थे और मेर जनजाति से जुड़े थे। आज भी नरवर से दिवेर तक रावत-मेहरात बसे हुए हैं। मेरवाड़ा राज्य की सीमा उत्तर में खरवा, दक्षिण में दिवेर, पूर्व में बघेरा और पश्चिम में बवाईचा है।

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि ब्यावर से प्रारंभ में फौज की रसद सप्लाई होती थी तथा यहां इस कार्य हेतु छावनी स्थापित थी। यहां की कृषि पैदावार, रूई व ऊन तथा अनाज की मंडी होने के कारण यहां दूर-दूर के क्षेत्रों से लोगों का सरोकार था। यहां के सर्राफा व्यवसायी व सट्टा बाजार भी देश में अपनी खास पहचान रखता था। यहां सूती कपड़ा बनाने की राज्य की पहली मिल स्थापित हुई तथा बाद में तीन कपड़ा मिले यहां के आर्थिक विकास का आधार बनी। इसके कारण यहां कॉटन जिनिंग एण्ड प्रेसिंग की फैक्ट्रियां लगी, दरी व रस्सा बनाने के कुटिर उद्योग पनपे और रंगाई-छपाई, चमड़ा उद्योग, तम्बाकू व बीड़ी उद्योग सहित तिलपपड़ी उद्योग पनपे। कालांतर में सीमेन्ट-एस्बेस्टॉज इकाईयां लगने लगी और आज तो यहां भारत की नामी सीमेन्ट उत्पादक कम्पनी श्री सीमेन्ट की चार इकाईयां स्थापित होने के साथ ही समीप ही अंबूजा सीमेन्ट ने भी पांव पसारे। यहां की अरावली पर्वत श्रृंखलाओं में समाएं क्वार्ट्ज फेल्सपार, सोड़ाऐश आदि मिनरल पीसने की इकाईयां यहां का मुख्य कारोबार बन गया है।

अब अगर इस औद्योगिक विकास पर पलटकर नजरें डालें तो हम पाएंगे कि सारा विकास एक झूंटा सपना साबित हो गया है। विकास के नाम पर अब यहां विनाश के जख्मों के निशान और दर्द की आहटें शेष रह गई है। कपड़े की तीनों मिलें बंद हो गई, रंगाई-छपाई उद्योग ने दम तोड़ दिया, सीमेन्ट एस्बेस्टॉज कारोबार ठप्प पड़ गया, कृषि मंडी से किसानों ने मुंह मोड़ लिया, ऊन व रूई की मंडी बीकानेर और भीलवाड़ा में जा अटकी। सर्राफा बाजार व ऑन लाइन कमोडिटी के सट्टे ने यहां के पूंजीपति घरानों तक को खोखला कर दिया। नगर सेठ कहलाने वाले लोगों की दूसरी व तीसरी पीढ़ी के युवराजों पर नजर डालें तो सारे के सारे दया के पात्र नजर आते हैं।

ब्यावर की बर्बादी में यहां के कमजोर राजनैतिक नैतृत्व का मजबूत हाथ रहा है। कभी यहां जिला स्तर के दस-दस कार्यालय हुआ करते थे लेकिन अब एक-एक कर सारे यहां से चले गए। भाजपा राज में यहां से डाईट को मसूदा ले जाया गया। सीएमएचओ दफ्तर को अजमेर ले गए। टेलीफोन के अकाउन्ट्स ऑफिस को हटा दिया। रेल्वे के परिचालक विश्रामगृह पर दीमक लग रही है। भेड़-ऊन कार्यालय पर कैंची चला दी गई। शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ठ पहचान रखने वाले स.ध. महाविद्यालय के कई विभाग समाप्त हो गए। विधि की कक्षाओं सहित कई संकाय हट गए। पतन की यह सूचि काफी लंबी है...। ब्यावर में पहला मदरसा (1850), पहला चर्च (1860), पहला छापाखाना (1860), पहली नगर पालिका (1867), पहला अस्पताल (1869) आदि कई चीजें यहां राज्य में पहली-पहली होने का गौरव रखती हैं लेकिन इतिहास के उस गौरव का क्या करें जबकि हमारा वर्तमान निराशा से भरा है और भविष्य अंधकार से घिरा है।

यहां सिर्फ इतना ही कहना जरूरी है कि हम विनाश के इस सिलसिले को रोकें और ब्यावर को उसका वैभव लौटाने पर चिंतन करें। इसवर्ष को शताब्दी हीरक जयंती वर्ष के रूप में मनाकर इसे पुनः गौरव प्रदान करें।

ब्यावर शहर के 175वें स्थापना दिवस के
शताब्दी हीरक जयंती पर्व पर
मंगल फोटो स्टूडियो व गीता कोचिंग सेन्टर
की ओर से ब्यावर-मेरवाड़ा निवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं

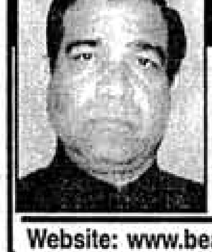

'बादशाह' वासुदेव मंगल
इतिहासकार, स्वतंत्र लेखक एवं मुक्त वक्ता व कैरियर काउन्सलर
भगत चौराहा, ब्यावर। फोन : 250502 (दु.), 254135 (फैक्स), 252597 (नि.)
Website: www.beawarhistory.com, www.geetavision.com

दैनिक भास्कर | ब्यावर

175वां स्थापना दिवस...

व्यापार का प्रमुख केंद्र था ब्यावर

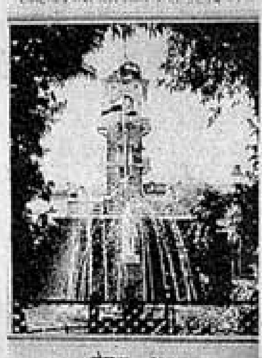

– नेहरू – भवन –

ब्यावर| ब्यावर अर्थात मेरवाड़ा की स्थापना ही स्टेट के रूप में हुई और इस मेरवाड़ा स्टेट का मुख्यालय बनाने के लिए 1 फरवरी 1836 में इस शहर की आधारशीला रखी गई। राजपूताना में 18 देशी रियासतों के साथ दो अंग्रेजी राज्य थे। एक अजमेर और दूसरा मेरवाड़ा। यहां पर मेर जाति के लोग निवास करते थे। इस कारण इसको मेरवाड़ा नाम दिया गया। इस जाति में रावत और मेहरात सम्मिलित हैं, जो आज भी नरवर से लेकर दिवेर तक निवास कर रहे हैं। मेरवाड़ा स्टेट की सीमा उत्तर में खरवा, दक्षिण में दिवेर, पूर्व में बघेरा और पश्चिम में बबाईचा है। अतः ब्यावर अंग्रेजी राज्य होने के कारण उस वक्त अति विकसीत राज्य था। यह प्रत्येक क्षेत्र में विकसित था। यहां सूती वस्त्रों की तीन मीलें, बडे उद्योग में पंद्रह-बीस कॉटन जिनिंग एवं प्रेसिंग फैक्ट्री, मंझले उद्योग में और कुटीर उद्योग में सूती दरी, रस्सा बनाना, मर्दाना व जनाना मोचड़ी बनाना, कपड़े की रंगाई-छपाई आदि है। इसके बाद तम्बाकू, बीड़ी कुटीर उद्योग व मौसमी तिलपट्टी कुटीर उद्योग इसमें सम्मिलित हुए। अंग्रेजों के समय सिंचाई और खेती के लिए पीने के पानी के लिए कुए, बावडी और तालाब की व्यवस्था की गई। जमीन, जौत एवं उत्पादन के विपणन इत्यादि की व्यवस्था की गई। इसी प्रकार व्यापार में ऊन, रूई व सर्राफा व्यापार में राष्ट्रीय स्तर की मंडी रही है, परन्तु यह सब बातें अब फिर इतिहास में ही रह गई हैं।

अंग्रेजी काल में स्थापना से लेकर सन् 1950 तक सम्पूर्ण विकास था जो प्रगति के शिखर तक विकसीत रहा है। वर्तमान में निराशाभरा जीवन हो गया है। इस कारण क्षेत्र में व्यापार-उद्योग चौपट हो गए हैं। इसका परिणाम क्षेत्रवासी बेरोजगार हो गए और लोगों की जिंदगी तनाव पूर्ण हो गई है। आज ब्यावर क्षेत्र को जिला बनाना तो दूर की बात हो गई और उपखंड को भी खंडित कर दिया गया है। अंग्रेजी काल में राजपूताना में सबसे पहला मदरसा सन् 1850 में यहां खोला गया, यहीं सबसे पहला चर्च सन् 1860 में बनाया गया इसके अतिरिक्त यहां पहली प्रिंटिंग प्रेस 1860 में खोली गई। इसके अलावा नगरपालिका सन् 1 मई 1867 में व सबसे पहला अस्पताल सन् 1869 में ब्यावर में ही स्थापित किया गया था जो देश में एक मिसाल है। ये सब ब्यावर को अंग्रेसी काल की देन हैं। मेरवाड़ा स्टेट में उस समय 84 राजस्व गांव, 9 दर्रे, 24 कीले व 12 कोस की गोलाकार घाटी हुआ करती थी, जो समृद्ध व उन्नत प्रदेश था, लेकिन आज वह इतिहास की बात है। अतः केन्द्र सरकार द्वारा ब्यावर का विकास तो पुनः मेरवाड़ा स्टेट बनाकर ही संभव हो सकता है, अन्यथा नही। क्योंकि मेर जाति आदिवसी (ट्राईबाल जाति) है। जिसका विकास आजादी के 63 साल बाद भी बिल्कुल नहीं हुआ। मेर जाति ने 9 युद्ध किए थे। पहला जयपुर महाराज से , दूसरा उदयपुर महाराणा से, तीसरा जोधपुर महाराज से फिर जयपुर महाराज से पांचवां और छठा युद्ध मराठों से, सातवां व आठवां और युद्ध अंग्रेजों से किया था। पहिले आठ युद्ध तो मेरों ने जीते, लेकिन नवां युद्ध मेर जाति हार गई। इसमें अथूण खांन को रामगढ़, सेंदडा रोड पर मार दिया गया व लाखा खांन को सराधना सेंदड़ा रोड पर पकड़ लिया गया। तब से सन् 1823 में इस क्षेत्र में अंग्रेजों का अधिकार हो गया। पर्यावरण की जगह प्रदूषण ने ले ली। बेरोक-टोक खनन इत्यादि व मिट्टी के कारखानों को स्थापित कराकर इस क्षेत्र की अकूत- संपत्ति बाहर के लोग कमाकर बाहर ले जा रहे हैं और इस क्षेत्र के निवासी लाचार होकर यह नजारा पिछले 30 साल से देख रहे हैं। परिणामतः घातक बीमारियां फैल गई हैं। जैसे चर्म रोग, कैंसर, तपैदिक और अस्थमा। उपजाऊ जमीन के स्थान पर बंजर हो गई। जिससे सब्जी व अनाज का उत्पादन नहीं के बराबर हो गया। इन कारखानों को चलाने के लिए बिजली उत्पादन के लिए पानी की स्थानीय व्यवसायिक खर-पतवार से जमीन में पानी का स्तर बहुत कम होता जा रहा है। इससे क्षेत्र में पाने के पानी की भारी समस्या उत्पन्न हो गई है। वहीं दूसरी ओर जनसंख्या बढ़ रही है। इससे बेरोजगारी बढ़ रही है। ब्यावर नगरपरिषद परिसर के काल्विन हॉल को 14 फरवरी सन् 2010 को 100 साल पूरे होंगे। वर्तमान में इसको नेहरु भवन के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार 3 मार्च 2010 में ब्यावर के नॉर्थन शूलब्रेड मेमोरियल चर्च को 150 वर्ष पूरे हो रहे हैं, परन्तु इसके 100 साल व 150 साल के उत्सव मनाने का कोई उत्साह नहीं दिखाई दे रहा है। इसी प्रकार 1 फरवरी 2010 को ब्यावर शहर की स्थापना का 175 वां दिवस है अर्थात इसके भी वर्ष पर्यंत चलने वाले कार्यक्रम शासन-प्रशासन की ओर से होने चाहिए जो नहीं हैं। एक साल तो दूर, एक दिन के कार्यक्रम का आयोजन भी नहीं किया जाता है। कैसे जागरुकता आएगी यहां के निवासियों में है।

(जैसा इतिहासकार वासुदेव मंगल ने बताया)